www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-4* *April 2025***

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में शिवनंदन मंडल का योगदान

नेहा भारती

U.G.C. NET, शोद्यार्थी इतिहास विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

सार– भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में कोशी क्षेत्र अन्तर्गत मधेपुरा जिला के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान अविस्मरणीय है। यहॉ की धरती ने अनेक पुत्रों को जन्म दिया जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। अनेक कष्ट सहे, यातनाएं झेली और अपने प्राणों की आहूती दी। स्वाधीनता की ज्वालामुखी मधेपुरा की मिट्टी में बारूद बिछे थे, जिसका प्रत्येक धमाका भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास के नये अध्याय का सूत्रपात करने वाला था। इस दमकती और महकती मिट्टी से भारत माता को समर्पित अनेक वीरों ने अपना जौहर दिखाया, उस वीर सबूतों में से एक हैं–शिवनन्दन मंडल।

मुख्य शब्द– राष्ट्रीय आन्दोलन, कोशी क्षेत्र, जमींदार, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन, सेनानी।

परिचय–

शिवनन्दन मंडल एक महान् स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका जन्म मधेपुरा जिला के रानीपट्टी गॉव में 18 अप्रैल 1891 ई0 को एक जमींदार परिवार में हुआ था। यह गॉव कुमारखण्ड प्रखण्ड के अन्तर्गत पड़ता है। उनके पिता का नाम राम प्रसाद मंडल तथा माता का नाम कामो देवी था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गॉव के प्राथमिक विद्यालय में हुई। माध्यमिक शिक्षा उन्होंने मधेपुरा के सिरीज इन्स्टीच्यूट से प्राप्त किया। इस विद्यालय के छात्र होते हुए इन्होंने 1905 ई0 में बंग–भंग आन्दोलन में छात्रों के एक समूह का नेतृत्व किया। इसी स्कूल से 1907 ई0 में इन्होंने इन्ट्रेन्स की परीक्षा पास की और तत्पश्चात वे टी0एन0जे0 कॉलेज भागलपुर में नाम लिखवाया और यहीं से स्नातक की डिग्री हासिल की। वे उस समय कोशी क्षेत्र के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्नातक की डिग्री प्राप्त की। स्नातक करने के बाद वे कलकत्ता चले गये और 1918 ई0 में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से ही लॉ की डिग्री प्राप्त की।[1]

शिवनन्दन प्रसाद मंडल वकालत की पढ़ाई पूरी करने के बाद मधेपुरा लौट आए और अपने गॉव के ही स्कूल में पढ़ाने लगे। कुछ दिनों के बाद उन्होंने 1922 ई0 के मधेपुरा सिविल कोर्ट में वकालत करना शुरू किया। उन दिनों पूरे देश में गॉधी जी के द्वारा चलाए जा रहे असहयोग आंदोलन की धूम थी। आखिर शिवनन्दन मंडल जी वकालत छोड़ कर देश सेवा में लग गये।[2] असहयोग आन्दोलन के दौरान ही उन्होंने सक्रियता दिखाते हुए 1923 ई0 में मधेपुरा लोकल बोर्ड के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। 1925 ई0 में वे इस बोर्ड के निर्विरोध अध्यक्ष भी निर्वाचित हुए। इस बोर्ड के माध्यम से उन्होंने मधेपुरा के के अपेक्षितों के लिए अनगिनत काम किया।

1923 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ, जहॉ सविनय अवज्ञा आन्दोलन का प्रस्ताव पारित हुआ। उस अधिवेशन में शिवनन्दन मंडल भी मौजूद थे। उन्हीं दिनों वे देश के शीर्ष राजनीतिज्ञों के सीधा सम्पर्क में आ गये। जब महात्मा गॉधी द्वारा दांडी में 1930 में नमक बनाकर आन्दोलन की शुरूआत की गई तो देखते ही देखते सम्पूर्ण भारत में यह आन्दोलन फैल गया। मधेपुरा और सहरसा में फरवरी 1930 ई0 तक तकरीबन 770 लोग वोलन्टियर स्वयंसेवक बन चुके थे। तत्कालीन सहरसा जिला में महताबलाल यादव, शिवनन्दन मंडल, नन्द किशोर चौधरी, राजेन्द्र मिश्र, राम बहादूर सिंह, यदुनन्दन झा, राजेन्द्र लाल दास सरीखे लोग सविनय अवज्ञा आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे।[3]

5 मई 1930 को मधेपुरा में शिवनन्दन मंडल ने अपने कुछ साथियों के साथ मधेपुरा से 4 किलोमीटर दक्षिण स्थित

सुखासन चकला गॉव में यशोधर झा के खेत में नमक बनाकर नमक कानून को भंग किया। पुलिस ने नमक लेने का प्रयास किया किन्तु सिवालाल यादव नामक एक युवक नमक लेकर भाग निकला। राम बहादुर राय को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इसके विरोध में कॉग्रेस कमिटी के सभापति शिवनन्दन प्रसाद मंडल, मंत्री कमलेश्वरी प्रसाद मंडल (मुरहों) संयुक्त मंत्री महताव लाल यादव (मधेपुरा) नेतृत्व में जुलुस निकाला गया और कचहरी पहूॅचकर राम बहादुर सिंह (पंचगछिया) को मालाएं पहनाई गई और नारे लगाये गये। पुलिस ने उन तीन नेताओं क्रमशः शिवनन्दन प्रसाद मंडल, कमलेश्वरी प्रसाद मंडल तथा महताब लाल यादव को गिरफ्तार कर लिया। नेताओं की गिरफ्तारी का जन–समूह ने विरोध ा किया। परिणामस्वरूप प्रशासन ने कई अन्य लोगां को भी गिरफ्तार किया। दूसरे दिन 6 मई 1930 को राम बहादुर सिह, शिवनन्दन प्रसाद मंडल, कमलेश्वरी प्रसाद मंडल और महताब लाल यादव पर मुकदमा चलाया गया ओर भारतीय नमक अधिनियम की धारा 9 सी के अन्तर्गत इन लोगों को छह–छह महीने के लिए कारावास की सजा दी गई।[4] शिवनन्दन प्रसाद मंडल को भागलपुर सेन्ट्रल जेज भेज दिया गया। जेल की व्यवस्था पर उन्होंने वहॉ घोर आपत्ति जताई। जेल प्रशासन उन्हें हजारीबाग जेल में स्थानान्तरित कर दिया। वहीं उन्हें राजेन्द्र प्रसाद का सानिध्य प्राप्त हुआ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान शिवनन्दन प्रसाद मंडल तथा कमलेश्वरी प्रसाद मंडल जमींदार लोग की रवैया अख्तियार किये हुए थे, वह सब की नजर में आ गये थे इस सम्बन्ध में प्रशासन को परेशान कर देने वाली बात यह थी कि जमींदार केवल बाहरी मन से सरकार के प्रति वफादार थे। ''ऐसा लगता है कि वे कांग्रेस पार्टी से दुश्मनी लेना नहीं चाहते। उनका यह व्यवहार शायद स्वभाविक था। लेकिन प्रशंसनीय कतई नहीं।''[5]

1931 ई0 में शिवनन्दन प्रसाद मंडल जेल से रिहा हुए। रिहा होते ही वे नियमित रूप से नौजवानों के संगठन में लगे रहे। साथ ही लेखन में भी लग गये। इस क्रम में उन्होंने अपनी पहली पुस्तक 'भारत की झलक' लिखी, जिसके लिए राजेन्द्र प्रसाद ने टिप्पणी भी लिखी। उनकी दूसरी पुस्तक 'भारतीय वस्तु व्यवसाय का संहार' थी जिसमें उन्होंने भागलपुर के उजड़ते वस्तु उद्योग को मुख्य बिन्दु बनाया था। उनकी ये दोनों पुस्तकें 1936 ई0 तक छप चुकी थी।

भारत अधिनियम 1935 के अधीन बिहार प्रांत में प्रथम आम चुनाव 2 जनवरी से 27 जनवरी 1937 को संपन्न हुआ। इस चुनाव में ''शिवनन्दन प्रसाद मंडल मधेपुरा जेनरल रूलर क्षेत्र'' से कॉग्रेस के उम्मीदवार हुए। वे इस चुनाव में जमींदारों के उम्मीदवार कुमार भूपेन्द्र सिंह (बरूआरी) को भारी मतों से हरा कर चुनाव जीते।[6] श्री कृष्ण सिंह ने उन्हें संसदीय सचिव बनाया जिसमें उन्हें न्यायिक और जेल विभाग की जिम्मेदारी दी।[7] उन्होंने 20 जुलाई 1937 को संसदीय सचिव का शपथ ग्रहण किया। 1939 ई0 में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने मंत्री परिषद् को भंग कर दिया।

1941 ई0 में शिवनन्दन मंडल ने गॉधी के आहवान पर मधेपुरा में व्यक्तिगत सत्याग्रह किया। इस सत्याग्रह के दौरान इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस समय वे भागलपुर जिला के कांग्रेस कमिटी के सभापति के जिम्मेवारी भी संभाल रहे थे। इसी दौरान महात्मा गॉधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन का श्रीगणेश हुआ। शिवनन्दन प्रसाद मंडल ने इस आन्दोलन में काफी सक्रियता का परिचय दिया [8] और नेतृत्व किया।

13 अगस्त 1942 को मधेपुरा में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरूआत हुई। उसी दिन हरे कृष्ण चौधरी नामक एक चौदह वर्षीय छात्र ने ट्रेजरी कार्यालय पर भारतीय झंडा फहरा। 20 अगस्त को एक सशस्त्र पुलिस दल ने गोली चलाकर एक व्यक्ति की हत्या कर दी। इस पर लोगों में भारी उत्तेजना फैली किन्तु कुलानन्द झा और शिवनन्दन मंडल के प्रयत्न से लोग शॉतिपूर्ण रहे। उस दिन यह निश्चय हुआ कि सरकारी थाना अधिकारियों को इलाके के बाहर कर दिया जाए। शिवनन्दन मंडल आदि ने अधिकारियों को हटाने का भार कुलानंद जी को सौंपा।[9] शिवनन्दन मंडल इस समय अनुमंडल (मधेपुरा) के प्रभारी अधिकारी थे। उनका काम मधेपुरा इलाके में केन्द्रित था।[10] 7 सितम्बर 1942 को शिवनन्दन मंडल और कुछ अन्य व्यक्तियों ने मधेपुरा कांग्रेस भवन में एक सभा की और लोगों को अहिंसात्मक ढंग से अपनी कार्यक्रम चलाते रहने को कहा। शिवनन्द मंडल और कुछ अन्य व्यक्तियों ने 29 सितम्बर की एक अन्य सभा में भाषण किये। उससे लोगों में नया उत्साह फैला और कार्यक्रम आगे बढ़ने लगा। लोगों ने फिर इनके नेतृत्व में मधेपुरा कचहरी और अन्य सरकारी कार्यालयों को बन्द कर दिया।[11]

1943 ई0 में प्रोविन्शियल डाइरेक्टरों के साथ सदस्यों में से एक सदस्य शिवनन्दन मंडल बनाये गये। उनकी भारत छोड़ो आन्दोलन में बढ़ती गतिविधियों के कारण पुनः 13 अगस्त 1943 को गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन 1945 में उन्हें लम्बे कारावास से छोड़ दिया गया। 1946 ई0 में विधान सभा का दूसरा चुनाव हुआ। इस चुनाव में भी शिवनन्दन प्रसाद मंडल ने मधेपुरा जेनरल रूलर क्षेत्र से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़कर जीत दर्ज की।[12] उन्हें पुनः श्री कृष्ण सिंह ने संसदीय सचिव बनाया। इसी समय शिवनन्दन मंडल की तीसरी पुस्तक 'फ्री एंड कम्पलसरी प्राइमरी एजुकेशन' आयी। इसमें उन्होंने लिखा कि सामान्य लोगों को शिक्षित बनाना बहुत ही जरूरी है।

आजादी के बाद 1952 ई0 में प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर वे मुरलीगंज विधानसभा से विजयी हुए।[13] इस बार उन्हें कानून मंत्री बनाया गया जो स्वतंत्रता के बाद पहला मंत्रिमंडल था। पुनः 1957 के दूसरे आम चुनाव में कांग्रेस के ही टिकट पर मुरलीगंज विधानसभा से भारी बहुमत से चुनाव जीतकर विधानसभा पहूॅचे।[14] लेकिन मंत्री नहीं

बने, कारण चाहे जो भी हो। वे से मन से जनता की सेवा करना चाहते थे। अब वे गरीबों, पिछड़ों के संगठन के लिए काम करना प्रारंभ किये। सामाजिक चेतना पैदा करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। ऐसे महान नेता का निध ान 1963 ई0 में पटना में हो गया। बिहार सहित पूरे कोशी क्षेत्र में शोक की लहर दौर गई।

निष्कर्ष–

निःसन्देह, शिवनंदन प्रसाद मंडल का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा। देश को आजाद कराना तथा कोशी क्षेत्र का विकास ही उनका परम ध्येय था । जिन्होनें बिहार के राजनीतिक क्षेत्र में काफी प्रतिष्ठा अर्जित की।

संदर्भ–

1. राजेश कुमार सिंह, 'शिवनन्दन प्रसाद मंडल' बिहार विभूतिः भाग–क, बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना, 2012, पृ0/– 92
2. वही,
3. पी0सी0राय चौधरीय डिस्ट्रिक्ट गजेटियर–सहरसा, सेक्रेटेरियट प्रेस बिहार, पटना, 1965, पृ0–44
4. पोलिटिकिल डिपार्टमेन्ट, स्पेशल सेक्शन (पी0एस0), फाईल नं0–159/1930, मेमो नं0–461, दिनांक–22.05.1930, बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना।
5. पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट, स्पेशल सेक्शन (पी0एस0), फाईल नं0–172/1930, (भागलपुर, दिनांक–09.05.1930 को सत्याग्रह के सिलसिले में एक ग्वाला जमींदार की गिरफ्तारी के बारे में कहा गया है), बिहार राज्य अभिलेखागार पटना।
6. राधानन्दन झा, ओरिजन एंड डेवलपमेंट ऑफ बिहार लेजिस्लेचर, शारदा प्रकाशन, पटना, 1998, पृ0–240
7. वहीं, पृ0–69,
8. पी0सी0 राय चौधरी, पूर्वोद्धत, पृ0–46
9. बलदेव नारायण, अगस्त–क्रांति, बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना, 2007 (नव संस्करण), पृ0–187.
10. के0के0 दत्त, बिहार में स्वतंत्र आन्दोलन का इतिहास, भाग–3, अनु0–विष्णु अनुग्रह नारायण, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1999 (द्वितीय संस्करण), पृ0–154
11. वहीं, पृ0–156
12. राधानन्दन झा, पूर्वाद्धत, पृ0–245
13. वहीं, पृ0 –252.
14. वहीं, पृ0–257.

Cite this Article-

'नेहा भारती, 'भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में षिवनंदन मंडल का योगदान, Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:04, April 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i4009

Published Date- 15 April 2025